ISSN 2321-4945

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 8 ❖ अंक : 6-9 ❖ सितंबर-दिसंबर, 2016

Postal Rgd. No. GH-127/2016-2018

ISSN 2321-4945

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का

साहित्य-कला-संस्कृति विषयक मासिक मुख-पत्र

द्विभाषी राष्ट्रसेवक

वर्ष : 8 | सितंबर-दिसंबर, 2016 | अंक : 6-9

एक हृदय हो भारत जननी

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी

[केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित]

सलाहकार

श्री हरिकांत नाथ

डॉ. अच्युत शर्मा

डॉ. ताराकांत झा

श्री गोलोक चंद्र नाथ

श्री धीरेन चंद्र शर्मा

श्री विष्णु कमल तामुली

संपादक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

(मो. 9435340285)

कार्यकारी संपादक

रामनाथ प्रसाद

(मो. 9435147126)

शब्द-संयोजन व अलंकरण

रति कांत कलिता

वार्षिक शुल्क : दो सौ रुपये

अर्द्धवार्षिक : सौ रुपये

एक प्रति : बीस रुपये

प्रकाशक

डॉ. क्षीरदा कुमार शइकीया

मंत्री, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति

गुवाहाटी-781032

'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के हैं। संपादक या प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लेखादि भेजने का पता :

संपादक, द्विभाषी राष्ट्रसेवक

असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,

रूपनगर, गुवाहाटी-781 032

फोन : (0361) 2462811, 2463394

फैक्स : 0361 - 2463394

विषय-सूची

हिंदी विभाग

• सामयिकी		2
• कैसे आगे बढ़ेगी विश्व भाषा हिंदी	प्रोफेसर हेमराज मीणा 'दिवाकर'	3
• भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ	सुरेश चंद मीणा	5
• भक्तिकाव्य का समाज-दर्शन : कबीर के संदर्भ में	डॉ. आकाश वर्मा	7
• जलवायु परिवर्तन और जीवन पर इसका प्रभाव	डॉ. अनुशब्द	10
• भीष्म साहनी की कहानियों में राजनीतिक चेतना	प्रा. हरिशभाई बी. पटेल	15
• साहित्य में शरत की स्तुति	डॉ. नवकांत शर्मा	19
• नदी के द्वीप : अस्तित्व की पुकार	नंदिता दत्त	21
• काणखोवा काव्य : भूमिका	मूल : डॉ. गिरिकांत गोस्वामी अनुवाद : गीतामाला बरा	23
• पहचाने अपने आपको	मदन प्रसाद गुप्ता	28
• भारत के धार्मिक जीवन में शक्ति तत्व	राकेश पाठक	30
• भगवतीचरण वर्मा कृत चित्रलेखा : एक मूल्यांकन	डॉ. राजकुमारी दास	33
• अविच्छेद्य (असमीया कहानी)	मूल : शीलभद्र अनुवाद : हीरेंद्र कुमार शर्मा	35
• राष्ट्रभाषा हिंदी (कविता)	संतोष कुमार महतो	38
• मेरा प्यारा मणिपुर (कविता)	मनोहरमयुम यमुना देवी	38
• मनीषा पाल की दो कविताएँ		39
• समिति समाचार		40

असमीया विभाग

• ফুটা কলহ আৰু লেকাই চেতীয়াৰ কাহিনী	দাসো কলিতা	৪৩
• যুগে-যুগে দেৱী দুৰ্গা	কামিনী দেৱী	৪৬
• কলম (কবিতা)	ড° পৰীবুল দেৱী	৪৮
• ঠেকা খাওঁতাই (কবিতা)	মূল ঃ লীলাধৰ জগুড়ী অনুবাদ ঃ ড° বিনীতা নাথ দত্ত	৪৮

लेखक/लेखिकाओं से अनुरोध : • 'द्विभाषी राष्ट्रसेवक' के लिए भेजे जाने वाले लेखादि साहित्य, कला, संस्कृति विषयक होने चाहिए। • भेजे गये लेखादि साफ अक्षरों में या टाइप कराकर ही भेजें। • अनूदित लेखों के लिए मूल लेख का उल्लेख करना अनिवार्य है।

जलवायु परिवर्तन और जीवन पर इसका प्रभाव

❖ डॉ. अनुशब्द ❖

विश्व में अलग-अलग भौगोलिक प्रदेश हैं और इन प्रदेशों के पर्यावरण का अलग-अलग मिजाज भी है। पर्यावरण के मिजाज परिवर्तनशील होते हैं। इनके मिजाज में परिवर्तन दो तरह के होते हैं। कुछ अल्पकालिक होते हैं तो कुछ दीर्घकालिक। अल्पकालिक परिवर्तन को भौगोलिक शब्दावली में मौसम तथा दीर्घकालिक परिवर्तन को जलवायु कहते हैं। इसलिए मौसम और जलवायु पर्यावरण के दो अलग-अलग मूड्स हैं। समाजशास्त्रीय शब्दावली में बात करें तो मौसम को पर्यावरण की सभ्यता तथा जलवायु को उसकी संस्कृति कह सकते हैं। कारण कि सभ्यता में परिवर्तन तीव्रगति से होता है और संस्कृति में मंदगति से। यानी संस्कृति समाज की दीर्घकालिक अवस्था है और जलवायु पर्यावरण की।

जलवायु के मुख्यत: तीन घटक हैं-वायु, ताप और आर्द्रता। इन तीनों में किसी एक, दो या तीनों में होने वाले परिवर्तन को जलवायु परिवर्तन कहते हैं। यह तो हम सभी जानते हैं कि पृथ्वी के जन्मकाल से ही जलवायु में परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हो गयी थी। तब यह प्रक्रिया एक सहज स्वाभाविक प्राकृतिक घटना थी, क्योंकि उसका एक निश्चित पैटर्न था। उस परिवर्तन में एक लय थी, जो समस्त प्राणी-जगत या जैव-चक्र के संतुलन के लिए अनिवार्य एवं अपेक्षित भी थी, लेकिन आज जलवायु परिवर्तन की यति-गति में भारी असंतुलन आ गया है। हाल के वर्षों में जिस तेजी से दुनिया में जलवायु-परिवर्तन हो रहा है, उतनी तेजी से पिछले दस हजार वर्षों में कभी नहीं हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी की औद्योगिक क्रांति एवं मानवीय क्रियाकलापों में आये गंभीर बदलावों ने जलवायु-परिवर्तन को सबसे ज्यादा शक्ति और स्फूर्ति दी है। इसीलिए जलवायु-परिवर्तन आज सहज स्वाभाविक प्राकृतिक घटना न होकर अभूतपूर्व भौगोलिक दुर्घटना बन गयी है। और आज के समय की सबसे ज्वलंत पर्यावरणीय समस्या भी। इस समस्या के मुख्यत: दो कारण हैं। पहला, प्राकृतिक वैविध्य और दूसरा, मानवीय हस्तक्षेप। गौरतलब है कि यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज 1992 ने यह सुनिश्चित किया था कि मानवीय हस्तक्षेपों से होने वाले परिवर्तन को ही जलवायु परिवर्तन कहा जाएगा तथा प्राकृतिक कारणों से होने वाले परिवर्तन को जलवायु वैविध्य (climate variation) कहा जाएगा। लेकिन इंटर गवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आई.पी.सी.सी.) 2001 के अनुसार पर्यावरण में उपर्युक्त किन्हीं कारणों से आये परिवर्तन को जलवायु परिवर्तन कहा जाएगा। चाहे वह परिवर्तन मानवीय गतिविधियों से हो या प्राकृतिक गतिविधियों से।

प्राकृतिक वैविध्य के अंतर्गत मुख्यत: ज्वालामुखी विस्फोट, महाद्वीपों का खिसकना, धरती का घुमाव, समुद्री तरंगें आदि आते हैं। ज्वालामुखी विस्फोट के दौरान प्रचुर मात्रा में कार्बन गैसों, सल्फर डायऑक्साइड, धूलकण और राख का उत्सर्जन होता है, जिससे सूर्य की किरणों का मार्ग बाधित हो जाता है। हालांकि ज्वालामुखी थोड़े दिनों तक ही क्रियाशील रहते हैं। लेकिन इनसे निकली हुई गैसें जलवायु को दीर्घावधि

अनुशब्द